Rashtriya Sahara
Feb 5, '10.



# पचौरी के पक्ष में यूएनएफसीसीसी

## ■ अब तक आलोचना कर रहे पर्यावरण मंत्री रमेश का भी समर्थन

नई दिल्ली में बृहस्पतिवार को 'टेरी' द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय क्लाइमेट चेंज एग्जीबिशन में केंद्रीय मंत्री फारूक अब्दुल्ला, अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी, उनके पति राज कुंद्रा, पर्यावरणविद आरके पचौरी और फिनलैंड के पीएम मट्टी वॉनहेनेन।

नई दिल्ली (एसएनबी)। हिमालय के ग्लेशियर पिघलने के मुद्दे पर चारों तरफ आलोचनाओं से घिरे अंतर सरकारी समिति (आईपीसीसी) के चेयरमैन डॉ. आरके पचौरी को भारत सरकार की तरफ से 100 फीसदी समर्थन मिला है। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र प्रारूप संधि (यूएनएफसीसीसी) ने पचौरी का बचाव करते हुए यहां तक कहा कि उनके खिलाफ अभियान के पीछे कुछ स्वार्थी कंपनियों का हाथ हो सकता है।

पर्यावरण एवं वन मंत्री जयराम रमेश उन लोगों में हैं जिन्होंने पचौरी की जमकर आलोचना की थी लेकिन आज उन्होंने उनका समर्थन किया और कहा कि प्रधानमंत्री और वह स्वयं, डॉ. पचौरी का 100 फीसदी समर्थन करते है। उन्होंने संकेत दिया कि मल्टीनेशनल कंपनियां उनके पीछे पड़ी हैं। यूएनएफसीसीसी के कार्यकारी सचिव वो डी. बोअर ने संवाददाताओं से कहा कि आईपीसीसी की चौथी आकलन रिपोर्ट में 2035 तक हिमालयी हिमनदों के पिघल जाने का अनुमान बेशक भूल था लेकिन 3000 पन्नों की रिपोर्ट में सिर्फ इस एक

- कहा, वह और प्रधानमंत्री दोनों डॉ. पचौरी का सौ फीसद समर्थन करते हैं
- कुछ मल्टीनेशनल उद्योगों के डॉ. पचौरी के पीछे पड़े होने का दिया संकेत

भूल से उस मूल्यवान काम का महत्व कम नहीं हो जाता जो डॉ. पचौरी ने किया है।

डॉ. पचौरी के इस्तीफे की मांग के बारे में श्री बोअर ने कहा कि उन्होंने आईपीसीसी में बहुत लगन से काम किया है। रिपोर्ट में महज एक भूल के आधार पर उनके इस्तीफे की मांग करना सरासर असंवेदनशीलता है। श्री बोअर ने आईपीसीसी प्रमुख के खिलाफ अभियान के पीछे उन कंपनियों का हाथ होने की संभावना से इनकार नहीं किया जिनका व्यवसाय ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन घटाने की कोशिशों से प्रभावित होगा। यूएनएफसीसीसी के कार्यकारी सचिव ने कहा कि डॉ. पचौरी जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने को लेकर काफी मुखर रहे हैं। दूसरी ओर उद्योग इस बात को लेकर चिंतित है कि ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन घटाने के उपायों से उनका कामकाज प्रभावित होगा।

डॉ. पचौरी के खिलाफ अभियान की शुरुआत पश्चिमी मीडिया ने की थी। आईपीसीसी ने हिमालयी हिमनदों के पिघल जाने की तारीख को लेकर अपनी भूल मान ली है। उसने कहा है कि वह भविष्य में ज्यादा कठोर वैज्ञानिक मापदंड अपनाएगा। डॉ. पचौरी ने इन विवादों के कारण इस्तीफा देने से इनकार कर दिया है।

'आईपीसीसी की चौथी आकलन रिपोर्ट में 2035 तक हिमालयी हिमनदों के पिघल जाने का अनुमान बेशक भूल था लेकिन 3000 पन्नों की रिपोर्ट में सिर्फ इस एक भूल से उस मूल्यवान काम का महत्व कम नहीं हो जाता जो डॉ. पचौरी ने किया है'।

-वो डी. बोअर
कार्यकारी सचिव
यूएनएफसीसीसी